

ओमशान्ति। बाप पावन बना रहे हैं बच्चों को। तो जरूर बाप से प्यार चाहिए। भल भाईयो-भाईयो का आपस में प्यार तो ठीक है। एक बाप के सभी बच्चे भाई-भाई हैं। परन्तु पावन बनाने वाला एक बाप हो है। इसलिये सभी बच्चों का लक्ष्य एक बाप में चला जाता है। बाप कहते हैं हे बच्चों प्रभिकं याद करो। यह तो ठीक है तुम भाई-भाई हो, जरूर खीर-खण्ड ही होंगे। एक बाप के बच्चे ही। आत्मा में ही इतना प्यार है। जब कि देवताई पद प्राप्त करते हो तो बहुत ही आपस में तुम्हारा प्यार चाहिए। हम भाई-भाई बनते हैं, बाप से वरसा लेते हैं। बाप आकर सिखलाते हैं। जो समझने वाले होते हैं वह समझते हैं यह स्कूल है। बड़ी युनिवर्सिटी है। बाप सभी को दृष्टि देते हैं। वा याद करते हैं। बेहद का बाप सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को सभी आत्माओं को याद करते हैं। बाप की ही सारी दुनिया है। नई वा पुरानी। नई बाप की है तो पुरानी नहीं है क्या। बाप ही सभी को पावन बनाते हैं। पुरानी दुनिया भी मेशी ही है। सारी दुनिया का मालिक मैं ही हूं। भल में नई दुनिया में राज्य नहीं करता हूं परन्तु हे तो भरो ना। मेरे बच्चे। इस भरे बड़े घर में सुखी भी बहुत रहते हैं। और फिर दुःख भी पाते हैं। यह खेल है। यह सारी बेहद की दुनिया हमारा जैसे घर है। बड़ा माण्डवा है ना। बाप बहक जानते हैं, सारे घर में हमारे बच्चे हैं। सारी दुनिया को देखते हैं। सभी चैतन्य हैं। सभी बच्चे इस समय दुःखी हैं। इसलिये सभी पुकारते हैं। बाबा हमको छो छो दुःखी दुनियासे शान्ति की दुनिया में ले चलो। शान्ति देवा। बाप को पुकारते हैं, देवताओं को पुकारते हैं परन्तु सिवाय बाप के शान्ति कोई दे न सके। सभी का वह बाप है। उनको सारी सृष्टि का पूर्ण रहता है। बेहद का घर है। बाप जानते हैं इस बेहद के घर में इस समय सभी दुःखी हैं। इसलिये कहते हैं शान्ति देवा। सुख देवा दो चीज मांगते हैं ना। अभी तुम जानते हो अभी हम बेहद के बाप से सुख का वरसा ले रहे हैं। बाप आकर सब के हमारे सुख भी देते हैं। शान्ति भी देते हैं। कोई सुख शान्ति देने वाला तो नहीं है ना। बाप को ही तरस पड़ेगा। वह है बेहद का बाप। तुम समझते हो हम बाबा के बच्चे बहुत सुखी थे जब कि पवित्र थे। फिर अपवित्र बनने से दुःखी हो जाते हैं। काम चिदा पर बैठ काले बन जाते हैं। मूल बात कि बाप को भूल जाते हो। जिस बाप ने इतना उंच पद पाया। गाते भी हैं ना तुम मात-पिता . . . सुख घनेसे थे। सो फिर अभी ले रहे हों। क्योंकि अभी दुःख घने हैं। यह है तपोप्रधान दुनिया। विषय सागर में गोते खाते रहते हैं। समझ कुछ भी नहीं है। तुमको अभी समझ मिली है। समझते हो यह रोख नर्क है। यह भी समझते नहीं हैं। बाप बच्चों से पूछते हैं अभी तुम नर्कवासी हो या स्वर्ग वासी? जब कोई मरता है तो कह देते हैं स्वर्गवासी हुआ। अर्थात् दुःखों से दूर हुआ। फिर नर्क की चीजें उनको शक्तियों खिलाने हो। इतनी भी बुरा नहीं है। बिल्कुल ही पत्थर बुधि है ना। बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तुम बच्चों को राजयोग सिखलाते हैं, तुम समझते हो भारतवासी कितने उंच थे। अभी कितने जट बन पड़े हो। एक की बायोग्राफी में दूसरे का नाम डाल दिया है यह वेदकुपी है ना। एकसा वेदकुप कोन था? ब्यास भगवान। यह भी ड्रामा में नूध है। भूल जरूर होनी चाहिए तब तो भक्ति मार्ग बनी जो फिर नीचे गिरे। बाप कहते हैं मोठे बच्चे में तुमको यह नालेज सुनाता हूं। मेरे में ही यह नालेज है। ज्ञान सागर में हूं। कहते हैं यह शास्त्रों की अघाटी है। वह भी आत्मा ही है ना। यह भी समझते नहीं हैं। इतनी पत्थर बुधि बन गये है सभी धर्म के मनुष्य। जिनको कुछ भी भालूम नहीं है। बाप का ही पता नहीं है। भल कोई भी हो। गाली क्यों देते हो। सब जानती तो यह गाली देते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। कच्छ अवतार मत्स्य अवतार बराह अवतार। ठिकर भितर स में है। सभी अधर्मी बन गये हैं। फिर अनेक धर्मों का विनाश कर एक सतधर्म की स्थापना करते हैं। इस समय सभी अधर्मी बन गये हैं। मेरी कितनी ग्लानी करते हैं। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनके लिये कहते हैं भितर सब में है। ब्यास भगवान ने क्या लिखा दी है। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। बिल्कुल ही आरपुर्न बन पड़े हैं। आपस में लड़ने, झगड़ते रहते हैं। बाप बेहद की बात समझते हैं। तुम निधणके बन जाने कारणल इतने

रहते हो। बाप रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को<sup>2</sup> कोई भी नहीं जानते। बाप रचयिता ही अपना और  
 रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज समझते हैं। और तो कोई बता न सके। भगवान रचयिता ही आदि-मध्य-अन्त  
 को जानते हैं। और कोई मनुष्य नहीं जानते। तुम कोई से भी पूछो जिसको ईश्वर भगवान रचयिता कहते हो उनको  
 तुम जानते हो। इतने वेद-शास्त्र आद पढ़े हो परन्तु तुम उनको जानते हो? ठीकसीधर, कुत्तेबिल्ले में ईश्वर है यह  
 ही जाना है। कुत्ते-बिल्ले हैं गोया उनका बच्चा हुआ। तुम्हारे शास्त्रों में यह है। कहते हो कछ अवतार, मछअवतार।  
 वराहअवतार। उपर से अवतरते हैं तो जरू पहले शरीर धारण करते हैं ना। ऐसे तो नहीं उपर से कोई कछ-मछ  
 आते हैं। पहले अपन को तो समझो। मनुष्य तमोप्रधान है तो जनावर आद सभी तमोप्रधान दुःखी हो गये हैं।  
 मनुष्य सतोप्रधान सुखी है तो सभी सुखी बन जाते है। जैसे मनुष्य वैसे कि उनके ~~बच्चे~~ <sup>फरनीचर</sup> भी होते है। शाहुकार  
 लोग का फरनीचर भी अच्छा होता है। तुम बिल्कु सुखी विश्व के मालिक बनते हो। तो तुम्हारे पास हर चीज  
 सुखदाई ही होते हैं। वहां दुःखदाई कोई चीज हाँगी ही नहीं। यह नर्क है ही गन्दी दुनिया। मनुष्यों को लज्जा  
 नहीं आता, कह देते हम सभी भगवान है। बाप आकर समझते हैं भगवान तो एक ही है। वही पतित पावन है।  
 स्वर्ग की स्थापना करते हैं। देवताओं की महिमा भी गाते हैं। सर्व गुण सम्पन्न... मंदिरों में जाकर देवताओं की  
 महिमा और अपनी छिछिन-दा करते हैं। क्योंकि सभी अपवित्र भ्रष्टाचारी हैं। कोई भी सन्यासी ही शंकराचार्य ही  
 भ्रष्टाचार से जस पैदा होते है। कहा जाता है यह है भ्रष्टाचारी दुनिया। नर्कवासी दुनिया। श्रेष्ठाचारी स्वर्ग वासी  
 तो यह लोना है ना। जिनकी सभीपूजा करते हैं। सन्यासी भी करते हैं जब तक बड़े ही तब तक भक्ति करते  
 है। सत्युग में ऐसे नहीं होता। तुम्हारा सन्यास है बेहद का। बेहद का बाप आकर बेहद का सन्यास कराते हैं।  
 वह है हठयोग। हद का सन्यास। वह धर्म ही दूसरा है। बाप कहते हैं तुम अपने धर्म को भूल कितने धर्मों  
 में घूस गये हो। अपने भारत का ही नाम हिन्दुस्तान रखा दिया है। और फिर हिन्दु धर्म कह दिया है। वास्तव  
 में हिन्दुधर्म तो कोई ने स्थापन ही नहीं किया। मुख्य धर्म है ही देवी देवता: इस्लामी, बौधी, क्रिश्चनस। यह भी  
 किसकी पता नहीं है। इसलिए इनको कहा जाता है तुच्छ बुधि। स्वच्छ बुधि बनाने बाप को जानते ही नहीं।  
 बिल्कुल तुच्छ बुधि बन पड़े हैं। फरिश्ते बुधियाँ पास बुधि फिर पास बुधि से पत्थर बुधि देवतारं ही बनते हैं।  
 यह सारी दुनिया है आईलैंड। उसमें रावण राज्य है। रावण देखा है? जिसको घड़ी जलाते हैं। यह सब से पुराना  
 दुश्मन है यह भी समझते नहीं कि हम क्यों जलाते हैं। समझ चाहिए ना। यह क्या है यह कब से जलाते हैं।  
 समझते हैं परमपरा से। और इनकी भी कोई हिंसावा तो बुधू ठहरे ना। इस समय माया के राज्य में पतित भ्रष्टा-  
 चारी बन पड़े हैं। तुमको कोई जानते ही नहीं। शुद्र बुधि तुमको क्या जाने। तुम ही ब्रह्मा के बच्चे। तुम से  
 कोई पूछे तुम किसके बच्चे हो? और हम ब्रह्माकुमार कुमारियां हैं तो उनके बच्चे ठहरे ना। ब्रह्मा किसका  
बच्चा? शिव बाबा। हम उनके पोत्रे ठहरे। सभी आत्मारं उनके बच्चे हैं। फिर शरीर में आने से पहले उनके बच्चे  
बनते है। प्रजापिता ब्रह्मा है ना। इतनी प्रजा कैसे रचते है यह भी तुम जानते हो। यह रडाफ़शन है। शिव  
बाबा रडाफ़्ट करते हैं। तो ब्रह्मा बाप भी हुआ माता भी हुआ। रडाफ़्ट करते हैं तो मां- बाप दोनों चाहिए  
ना। शिव बाबा के रडाफ़्ट बच्चे हैं। ब्रह्मा द्वारा। मेला भी लगता है। वास्तव में मेला वहां लगना चाहिए  
जहां ब्रह्मपुत्री नदी जाकर मिलती है। उस संगम पर मेला लगना चाहिए। यह भी मेला है ब्रह्मा यहां बैठा है।  
तुम जानते हो बाबा भी है ममा भी है। परन्तु मेला है इसलिए ममा भुकरर किया जाता है। कि तुम इन ममा  
माताओं को सम्भालो। पुरुषों ने तो गुरु बन बेरा ही गर्क कर दिया है। सभी को भूट बना दिया है। बाप कहते  
हैं मैं तुमको सदगति देता हूं। फिर दुर्गति कौन देते हैं। आजकल तो वह गुरु लोग सगाई भी कराते हैं। मना  
थोड़े ही करते हैं कि पवित्र बनना है। खुद भी जाते हैं। बाबाने समझाया यह दुनियाबरोबर कोसघर है। यह है  
हिंसा। काम कटारी को हिंसा कहा जाता है। वह है डबल हिंसक। तुम ही डबल अहिंसक। वहां रावण होता ही

नहीं। भक्ति से होती है रात। ज्ञान से दिन। ज्ञान सागर बाप ही है। उनके लिए फिर कह देते सर्वव्यापी है। इन जैसी वेवकु फ मनुष्य कोई हो नहीं सकता। जनावर से भी बदतर है। बाप ~~अब~~ ही आकर समझाते हैं। और बच्चों को ही समझाते हैं। शिवभगवानुवाच है ना। शिवजयन्ति मनाते हैं तो जरूरी कोई में आते हैं। कहते हैं मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। मैं कोई छोटे का बच्चे का आधार नहीं लेता हूं। कृष्ण तो बच्चा है ना। मैं तो उनके बहुत जन्मों के अन्त में सी भी वानप्रस्त अवस्था में प्रवेश करता हूं। वानप्रस्त अवस्थाबाद ही मनुष्य भगवान का सिमरण करते हैं। जिसकी गुरु करते हैं वह तो भगवान को जानते ही नहीं। तब तो बाप कहते हैं यदा यदा हि ... में भारत में आता हूं। भारत की महिमा अपरम अपार है।

मनुष्यों को देह का अहंकार देखो कितना है। मैं फलाना हूं यह हूं। अभी बाप आकर तुमको अहम अभिमानी बनाते हैं। पीठे रहानी बच्चों को रहानी बाप बैठ सभी राज समझाते हैं। यह है पुरानी दुनिया। सतयुग है नई दुनिया। सतयुग में आदि सनातन देवी देवता धर्म ही था। 5000 वर्ष की बात है। शास्त्रों में तो फिर बुधु व्यास भगवान ने लिखा दिया है कल्प की आयु लाखों वर्ष है। कल्प 2 की आयु ही लम्बी लिखा दी है। वास्तव में है 5000 वर्ष का कल्प। मनुष्य बिल्कुल ही कुम्भ करण के नींद में सोये पड़े हैं। किसने यह अज्ञान दिया? गुस्कों ने। गुस्कों ने कहाँसे लाया? शास्त्रों से? शास्त्र किसने बनाई? व्यास भगवान ने। इससे तो फिर भी नावेल अच्छी है। शास्त्र पढ़ने से तो मनुष्य दुर्गीत को ही पाया है। नावेल पढ़ना भक्ति थोड़े ही है। यूं नावेल पढ़ने से कुछ फायदा नहीं है। वेदों शास्त्रों की तो गाड़ियां भर कर ~~कर~~ परिक्रमा करते है। खुद ही बेल बन कर गाड़ी को चलाते हैं। जिन शास्त्रों द्वारा दुर्गीत को पाया है। उन शास्त्रों की परिक्रमा दिलाते हैं। अभी यह बातें कोई नया सुनेगा तो गाली देगा। इसलिए बाप कहते हैं मैं बच्चों से ही बात करता हूं। मैं बच्चों को ही जानता हूं। और तो सभी जंगली जनावर बन्दर हैं। हम इन सभी का सदगति करता हूं। गाली देने वाले भी सब से नम्बरवन तो तुम ही ठहरो। भक्ति शुरू ही तुम करते ही ना। अपन को ही चमाखट मारी है। बाप ने तुमको पूज्य बनाया, फिर तुम पुजारी ~~हैं~~ यह बातें करने लगे हो। यह भी खेल है। कोई 2 मनुष्य नरम दिल होते है तो खेल देखकर भी रो पड़ते है। बाप तो कहते हैं जिन रोया ~~हैं~~ <sup>तिन</sup> खोया। सतयुग में रोने की बात ही नहीं। यहां भी बाप कहते है रोना न है। रोते हैं हैं दवापर कालयुग। सतयुग में कवरोते ही नहीं। पिछाड़ी में तो किसकी रोने की फर्सत ही नहीं रहेंगे। अचानक भरते रहेंगे। हायराम ~~भी~~ भी नहीं कह सकेंगे। विनाश ऐसा होगा जो जरा भी दुःख नहीं। क्योंकि हास्पिटल आदि तो रहेंगे नहीं। इसलिए चीजे ही ऐसी बनाते हैं। तो बाप समझाते हैं पत्थर बुधि महान मुर्ख बन जाते हैं। कुछ भी समझते नहीं। बन्दर से भी बदतर। बड़े बन्दर तो तुम बनते हो। तुम बन्दरों की मैं सुना लेता हूं। रावण पर जीत पाने लिए। अभी तुमको बाप युक्ति बतलाते हैं रावण पर जीत कैसे पानी है। सभी सीताओं को रावण के जंजीर से छुड़ाना है। यह सभी समझने की बातें हैं। सिवाय इस ज्ञान के बाकी सभी 100% मुर्ख हैं। 100% रो और ~~परसेन्ट~~ परसेन्ट कुछ हो तो लगा सकते हो। उन्हों का नाम ही रखा जाता है सुरत मनुष्य की है सीरत बन्दर की है। हे मनुष्य परन्तु बुधि बन्दर से भी बदतर है। इसलिए भगवानुवाचः, बच्चों को ही कहते हैं हियर नो ईवील ... भक्ति मार्ग की बातें तुम सुनते 2 दुर्गीत में आकर पहुंचे हो। कोई बोले हायराम। तुम कान बन्द कर लो। बोलो तुम राम किसकी कहते हो। गांधी को हाथ में गोता थी और याद करता था चन्द्रवंशी राम की। गीता तो है सूर्यवंशी ~~की~~ की। रामराज्य तो एक भगवान ही स्थापन करते है। मनुष्य क्या कर सकते। अभी श्रीमत तुमको मिलती है। तुम ही श्रेष्ठ बनेंगे। यहां तो श्री 2 का ~~ट~~ टाइटल सभी को दे दिया है। अच्छा फिर भी बाप कहते हैं अपन को अत्मा समझो और बाप को याद करो। कितना बन्दरफुल है। हार ~~और~~ और जीत का खेल बन्दर फुल है। तो बाप ही समझाते हैं। अच्छा पीठे 2 सिक्कीलधे बच्चों को रहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मारनिंग। रहानी बच्चों को रहानी बाप का नमस्ते।